ॐ श्री गुरुभ्यो नमः

हर हर शंकर जय जय शंकरा

नर्मदा पुष्कर महोत्सव निमंत्रण

(ऋषभ राशि)

ओंकारेश्वर (इंदौर-से)

ओंकार श्री गजानन महाराज आश्रम

भक्तिनिवास मम्लेश्वर रोड़

ब्रह्मपुरी (नर्मदा घाट), ओंकारेश्वर, मध्यप्रदेश 450554

नर्मदा पुष्कर - ओंकारेश्वर

श्रीक्रोधी वर्ष

चैत्र मास कृष्णपक्ष अष्टमी 17 (1-5-2024) बुधवार से

वैशाख मास शुक्लपक्ष पंचमी 28 (12-5-2024) रविवार तक

अलक्षलक्षलक्षपापलक्षसारसायुधं
ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् ।
विरञ्चिविष्णुशङ्करस्वकीयधामवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥

श्री नर्मदा (ऋषभ राशि) पुष्कर - ओंकारेश्वर

श्रीक्रोधी वर्ष

चैत्र मास कृष्णपक्ष अष्टमी 17 (1-5-2024) बुधवार से
वैशाख मास शुक्लपक्ष पंचमी 28 (12-5-2024) रविवार तक

सिद्धान्त सरली सिकरान्धम श्री स्कंद पुराण - श्री नारद पुराण		
मेषेश गंगा वृषभेश रेवा मिधुनेतु सरस्वती कर्कटे यमुना प्रोक्ता सिंहे गोदावरी स्मृथा	कन्यायाम कृष्णवेणी सा कावेरी तटगे स्मिरुथा वृश्चिके तामिरबरणी सा साबे पुष्करवाहिनी मकरे तुंगभद्रा	कुम्बे सिन्धु नदी स्मृता मीने प्राणहिता नदी सा कुरो संघ मनोस्मृता पुष्करक्षे मुनिनाम हि प्रवेशोत्र भूते स्मृता

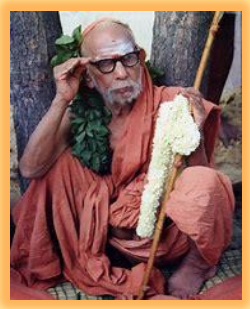

जगद्गुरु श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती स्वामी

जगद्गुरु श्री जयेंद्र सरस्वती स्वामी
के दिव्य आशीर्वाद के साथ

एवं

जैसा कि उनके द्वारा निर्धारित और आशीर्वाद, मार्गदर्शन और समर्थन से

परम पावन श्री कांची कामकोटि 70वें पीठाधिपति
जगद्गुरु
श्री शंकर विजयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य स्वामी

और सभी गुरु महास्वामियों के आशीर्वाद से

श्रीश्री विद्याधीश तीर्थ स्वामी
उडुप्पि मठ

श्रीश्री विश्वा प्रसन्न तीर्थ स्वामी
पेजावर मठ

तिरुवावडुदुरै आधीनम 24वां गुरु महा सन्निधानम - श्रील श्री अम्बलवान देसिक परमाचार्य स्वामीजी
धर्मपुर आधीनम 27वां गुरु महा सन्निधानम - श्रील श्री मासिलामणि देसिक ज्ञानसंबन्ध परमाचार्य स्वामीजी
तिरप्पनंदाल कासी मठ अधिपति - कैलै मामुनि श्रील श्री काशीवासी मुत्तुकुमार स्वामीजी
तिरुकैलाय श्री कंधा परम्परा सूर्यनार मंदिर आधीनम - वामदेव श्रीलश्री महालिंग बंडारा सन्नधि श्री शिवकरयोगी
स्वामीजीवेलाकुरिच्ची आधीनम - श्रीलश्री सत्य ज्ञान महादेव देसिक परमाचार्य स्वामीजी
सेन्कोल आधीनम 103वां गुरु महा सन्निधानम - श्रील श्री शिवप्रकाश सत्यज्ञान देसिक परमाचार्य स्वामीजी
पेरूर आधीनम- श्री श्री शांतलिंग मरुदाचल अडिगल
श्री श्री उमैयोरुभागम आधीन मठ
आर्ट आफ लिव्विंग, बेंगलूरु - श्री श्री रविशंकर गुरुजी
वेलूर नारायणी पीठ – श्री श्री शाक्ति अम्मा
श्री श्री रत्नगिरि बालमुरुगन अडिमै स्वामी
श्री श्री धन्वंतरि पीठ - श्री श्री मुरलीधर स्वामी
नंगनल्लूर - श्री श्री कामाक्षी स्वामी

प्रिय भक्तो,

पुष्कर एक भारतीय त्योहार है जो नदियों की पूजा के लिए समर्पित है। यह भारत में 12 प्रमुख पवित्र नदियों के किनारे तीर्थस्थलों पर, पूर्वजों की पूजा, आध्यात्मिक प्रवचनों, भक्ति संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में मनाया जाता है।

मीन भरणीता	मेष गंगा	वृषभ नर्मदा	मिथुन सरस्वती
कुंभ सिंधु	शास्त्रों के अनुसार गुरु भगवान राशि चक्र के अगले घर में जाने के बाद पहले 12 दिनों तक पूरे दिन निवास करते हैं और अगले राशि घर में जाने से पहले आखिरी 12 दिनों के लिए संबंधित पुष्कर नदियों के जल में निवास करते हैं। ऐसा माना जाता है कि वह अन्य दिनों में प्रतिदिन दोपहर 12:00 बजे से 1:00 बजे के बीच उन पुष्कर नदी के पानी में मौजूद रहते हैं।		कर्क यमुना
मकर तुंगभद्रा			सिंह गोदावरी
धनु ब्रह्मपुत्र	वृश्चिक तामिरभरणी	तुला कावेरी	कन्या कृष्णा

जैसा कि कहा गया है, यह दुनिया धार्मिक महत्व की नदियों और झीलों जैसे 35 मिलियन जल निकायों से संपन्न है। पवित्रता के इन जल में स्नान करने से व्यक्ति को दैवीय कृपा का आनंद प्राप्त होता है। जब बृहस्पति ग्रह हर साल एक घर से दूसरे घर में प्रवेश करता है, तो उस घटना को पुष्कर महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार हर साल भारत की विभिन्न नदियों में मनाया जाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि भगवान गुरु (बृहस्पति) किस घर में स्थित हैं।

जबकि सभी नदियाँ भगवान ब्रह्मा की रचना हैं, हमारी पुराण और उपनिषद कुछ नदियों को पवित्र मानते हैं और वे पूजनीय हैं. इन प्रसिद्ध नदियों को "पुष्कर" का दर्जा दिया गया है।

रासी चार्ट (ग्रहों की शिफ्ट) में, बृहस्पति के एक नए घर में स्थानांतरित होने के बाद 12 दिनों के लिए, पुष्कर भगवान, जो भगवान ब्रह्मा के कमंडलम में रहते हैं, उन पुष्करों (पवित्र नदियों) में मौजूद रहेंगे और हमें आशीर्वाद देंगे। ऐसा माना जाता है कि उन पवित्र समयों के दौरान, सभी देवता, ऋषि, मुनि और यहां तक कि तीन-मूर्ति भी इन नदियों का दौरा करते हैं और पवित्र स्नान का आनंद लेते हैं। इसीलिए; पुष्कर त्योहारों के दौरान इन नदियाँ में, यदि कोई पवित्र स्नान करता है तो वह, अन्य दिनों में उन 35 मिलियन जल निकायों में पवित्र स्नान करने की तुलना में अधिक पवित्र माना जाता है।

1 मई, 2024 को आने वाले गुरु पेयर्ची (बृहस्पति का मेष राशि से वृषभ राशि में स्थानांतरण) द्वारा सभी के लिए उनकी कुंडली में उनके सत्तारूढ़ घर के अनुसार दिए गए वरदान और दोष, जैसा कि जोतिड रत्ना श्री एम.एस.वरदराजा भट्टाचार्य द्वारा परिणाम निकाला गया है। डी.एस्ट्रो, कोषिक्कोड (9787213226) तिरुगणित पंचांग के अनुसार नीचे दिया गया है। कृपया निवारण उपाय के लिए ज्योतिषी से परामर्श लें।

यदि आप अपना वार्षिक अनुष्ठान करते हैं और बृहस्पति के परिवर्तन के दौरान आयोजित होने वाले पुष्कर महोत्सव के दौरान निर्दिष्ट नदी में पवित्र स्नान करते हैं, तो यह कई असाध्य समस्याओं को खत्म कर देगा और हमारे जीवन में किए गए पापों को भी दूर कर देगा, विशेष रूप से हमारे पूर्वजों (पितृस) से संबंधित). यदि आप विशेष पूजा करते हैं, जैसे गौरी पूजा, गंगा पूजा, बृहस्पति पूजा, और दंपती (जोड़े) पूजा, तो यह किसी के जीवन में कई भाग्य के द्वार खोल सकता है।

अन्य सामान्य दिनों में किए गए दान की तुलना में पुष्कर में दान करना अधिक प्रभावशाली होता है। वेद पंडितों और जरूरतमंदों को सामराधन, अन्नदान और वस्त्रदान के माध्यम से दान करना काफी नेक और पवित्र है, जैसा कि वेदों में बताया गया है।

जब 1 मई, 2024 को भगवान गुरु मेष राशि से वृषभ राशि में प्रवेश करते हैं, तो पवित्र पुष्कर महोत्सव श्रद्धा के साथ और सभी वैदिक अनुष्ठानों के साथ निर्दिष्ट नदी – माता, नर्मदा नदी में मनाया जाता है।

श्रीक्रोधी वर्ष चैत्र 17वें बुधवार से चैत्र 28वां रविवार (1 मई, 2024 से 12 मई, 2024) तक, भगवान बृहस्पति इस अवधि में नर्मदा पर वैदिक अनुष्ठान करने वाले भक्तों को आशीर्वाद देंगे, जिसे इंदौर के पास ओंकारेश्वर में आदिपुष्कर के रूप में मनाया जाता है।

श्री बृहस्पति का मेष राशि से वृषभ राशि में स्थानांतरण – वरदान और दोष

लाभान्वित राशि		परिकारम करने वाले राशि
मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर		ऋषभ, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ, मीन
मेष	ऋषभ	मिथुन
स्वस्थान - लाभ	जन्मगुरु – व्यर्थ प्रयास	व्ययगुरु – धनाभाव
कर्क	सिंह	कन्या
लाभगुरु – धंधा और परिवार लाभ	दशम स्थान गुरु – धंधा और व्यापार में ध्यान	भाग्य गुरु - लाभ
तुला	वृश्चिक	धनु
अष्टमगुरु – स्वास्थ्य में ध्यान आवश्यक	सप्तमगुरु – शुभ लाभ	षष्टमगुरु – स्वास्थ्य खराब और मामला, शेयरमार्केट आदि में ध्यान आवश्यक
मकर	कुंभ	मीन
पंचमगुरु – शिक्षा-विद्या क्षेत्र आदि में लाभ	अर्द्धाष्टमगुरु - वाहन यात्रा में ध्यान, माता, घर – ध्यान – परेशानी से बचे रहे	ग्यारहवागुरु – प्रयासों में बाधा उत्पन्न होने की संभावना

पौराणिक नर्मदा

पुराणों में नर्मदा नदी को भगवान शिव की अत्यधिक तपस्या के परिणाम के रूप में महिमामंडित किया गया है, और फिर भी लाखों देवताओं की चिरस्थायी इच्छा की अंतर्निहित मूर्तिकला - एक ऐसी नदी जो स्वयं शक्तिशाली गंगा से भी अधिक प्रतिष्ठित और पूजनीय है। जबकि भारत की सभी पवित्र नदियों के कई चुनिंदा घाटों को स्वयं पवित्र माना जाता है, मत्स्य पुराण यह पवित्र करता है कि नर्मदा नदी के दोनों किनारे, पूरी तरह से, पवित्र बिंदुओं के रूप में पूजनीय हैं और पवित्र स्नान और पुण्य काल-स्नान के लिए उपयोग किए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि, यदि कोई अन्य पवित्र नदियों में स्नान करता है, तो उसे मोक्ष प्राप्त हो सकता है; फिर भी, श्रद्धापूर्वक नर्मदा के दर्शन मात्र से ही व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है - इसीलिए, नर्मदा को आदरपूर्वक 'मुक्ति दायिनी' कहा जाता है।

400 से अधिक स्नान घाटों वाली नर्मदा मध्य प्रदेश के अमरकंधक से निकलती है। वह माईक्कन पहाड़ियों के बीच सोनमुत की सुरम्य घाटी से पनपती है। वह गुजरात में बारूच के निकट अरबी सागर में संगम करती है।

नर्मदा के भंवरों द्वारा लाए गए कंकड़-पत्थर रुक-रुक कर गिरने से हिलते और आकार लेते हैं, और आधार चट्टानें साल-दर-साल नरम होती जाती हैं और घूमते पानी के जल-गतिशील प्रभावों के कारण, कई सिलेंडर के आकार को प्राप्त करते हैं, लगभग समान लिंग रूप को और 'बाणलिंग' के नाम से जाना जाता है। यह जानकर ख़ुशी होती है कि, ऐसे ही एक विशाल बाण लिंग को तंजावुर ब्रह्देश्वर (बड़े) मंदिर में मुख्य देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

भिरुगु महर्षि, कपिल मुनि, मांडव महर्षि, मार्कंडेय ऋषि जैसे संतों और तपस्वियों ने नर्मदा नदी के तट पर तपस्या की और मोक्ष प्राप्त किया - ऐसा पुराणों का कहना है। आदि शंकराचार्य, अपने गुरु, गोविंद भगवत पाद से, केवल नर्मदा के तट पर मिले थे, जब उन्होंने एक गुरु की तलाश में केरल के कलाडी से पैदल यात्रा की थी, जो उन्हें शिष्य बनने और सन्यास धर्म में दीक्षित होने के लिए भिक्षा दे सके। .

शंकर ने दो महीने तक उत्तर की यात्रा की और नर्मदा के तट पर पहुँचे। उन्हें महायोगी, गोविंद भगवत पाद को गहरी तपस्या में देखने का मौका मिला। उस समय, नर्मदा बाढ़ में थी और बाढ़ के पानी को योगी की निष्ठा को परेशान करने और उन्हें नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिए; बाढ़ के पानी को इकट्ठा करने और उसे योगी से दूर करने के लिए अपने कमंडल के प्रयोग से समर्पित प्रयास किया। गोविंद भगवत पाद को शंकर के कृत्य का एहसास हुआ और यह भी एहसास हुआ कि शंकर कोई और नहीं बल्कि भगवान शिव हैं, जो किसी उद्देश्य के लिए शंकर

अवतार लेकर अवतरित हुए थे। इस अवतार की वास्तविक प्रकृति को समझने के बाद, वह शंकर को दीक्षा देने और गुरु से शिष्य के रूप में अपनी शिक्षाएँ देने के लिए सहमत हुए।

शिव पुराण (1.12) में नर्मदा को 24 पक्ष वाली नदी बताया गया है। भारत की अन्य पवित्र नदियों के लिए, पवित्र स्नान करने और पितृ तर्पण करने के लिए पवित्र पुण्य काल के रूप में कुछ विशिष्ट समय निर्धारित किए गए हैं - एक या दो पक्ष विशेष रूप से निर्दिष्ट हैं। जबकि, नर्मदा के लिए, इस तरह का कोई प्रतिबंध नहीं है। वर्ष भर में, सभी 24 पक्षों को धार्मिक स्नान करने के लिए उपयुक्त और पवित्र अवधि माना जाता है।

जब शिव ने (त्रिपुरम लीला) तीन पहाड़ियों को नष्ट कर दिया, तो दो जलकर राख हो गईं और तीसरी दो में विभाजित हो गई - एक दक्षिण में श्रीशैल पहाड़ियों के रूप में गिरी और दूसरी अमरकंटक के रूप में, जहां से नर्मदा नदी का उद्गम होता है।

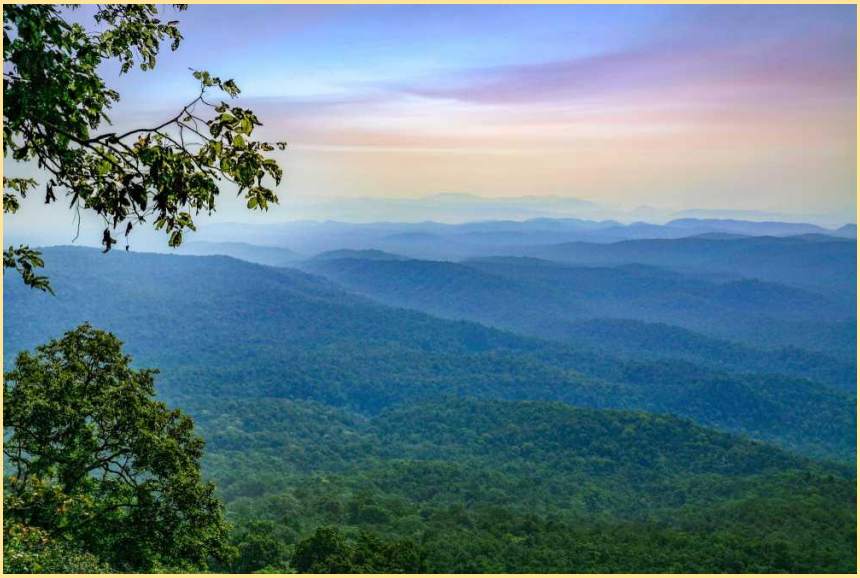

जब भगवान शिव तपस्या के लिए गहरे ध्यान में होते हैं, तो उनके तप की गर्मी उनके धड़ से पसीने की नदी बहा देती है। इस प्रकार अस्तित्व में आया पानी अमरगंटक में एक तालाब के रूप में इकट्ठा होता है और तालाब से नर्मदा नदी के रूप में बहता है - ऐसा पुराणों का कहना है। चूँकि वह शिव के शरीर से पैदा हुई थी, इसलिए उसने स्वाभाविक रूप से तीव्र तेजस प्राप्त कर लिया था जो सभी देवताओं के लिए आकर्षण बन गया था। जब उनमें से हर कोई उससे शादी करना चाहता था, तो उसने चट्टानों और घाटियों के बीच लुका-छिपी खेलकर उन सभी को डांटा। उनकी चंचलता युगों बाद भी कायम है ।

जिस शरणागति को उन्होंने विनयपूर्वक शिव से प्रार्थना की थी कि उसने, उन्हें अपनी पवित्रता को प्रदान किया है जो किसी की कल्पना से परे है, ऐसा पुराणों का कहना है।

जबकि वह पवित्रता का प्रतीक है, वह लालसाओं की गहराई को भी व्यक्त करती है - इसलिए यह पिछले वर्षों की कहानी का एक और मोड़ है। राजा मेगलन की बेटी नर्मदा, कोनापथरन नामक एक लड़के से प्यार करती थी। लेकिन यह एकतरफा मामला था, कोनापथरन को एक अन्य

युवती, गंगा से प्यार था। लेकिन, जब राजा ने चाहा कि कोनापथरन उसकी बेटी से शादी करे, तो वह सीधे तौर पर राजा की इच्छाओं को अस्वीकार नहीं कर सका। राजा की नाराजगी से बचने के लिए उन्होंने और गंगा दोनों ने एक युवा ऋषि की मदद मांगी। ऋषि, उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गए। वह राजा के पास गया और नर्मदा को अपनी पत्नी के रूप में माँगा। लेकिन, राजा ने अनुरोध को अस्वीकार कर दिया और उनके इनकार को एक बहाने के रूप में लेते हुए, ऋषि ने राजा को एक पहाड़ के रूप में बनने का शाप दिया और नर्मदा, कोनापथरन और गंगा को युगों और कल्पों में हमेशा के लिए अपनी लालसा को संतुष्ट करने के लिए नदियों में बदल दिया। सोनेमोटा घाटी से निकलने वाली कोया नदी (कोनापैथियन) उत्तर-पूर्वी दिशा में बहती है और गंगा नदी से मिलती है। मैक्काला पठार से निकलने वाली नर्मदा नदी दक्षिण-पश्चिम में समुद्र से संगमित करने जाती है।

पद्म पुराण, स्कंध पुराण, लिंग पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, मत्स्य पुराण और सोमदेव के "कथा सरित सागरम" में नर्मदा नदी का वर्णन किया गया है। महाभारत, वशिष्ठ संहिता और सतपद ब्राह्मणम भी नर्मदा नदी के अद्वितीय महत्व के बारे में बात करते हैं।

हिंदू धर्मग्रंथों से परे, बौद्ध धर्मग्रंथों में भी नर्मदा - महायान प्रज्ञानन परममिता सिद्धांत, मंजुश्री मूलकल्प - वज्रयान बौद्ध धर्म की प्रशंसा की गई है।

नर्मदा के कंकड़ लिंग बन जाते हैं - यह पुरानी कहावत है।

प्राचीन काल से, लोग गंगा नदी में पवित्र डुबकी लगाकर अपने पाप धोते हैं। इस प्रकार, गंगा नदी समय के साथ नकारात्मकता (कालापन) को प्राप्त करती है और एकत्र करती है। और, पुराण में कहा गया है कि गंगा नदी, हर साल नर्मदा के पवित्र जल में स्नान करने और अपने शरीर में जमा हुए पापों को धोने के लिए आती है। वह हर साल काली गाय के रूप में नर्मदा नदी में पवित्र डुबकी लगाने आती है – ऐसा पुराण कहता है।

नर्मदा परिक्रमा

भारत और विदेशों में, पहाड़ियों, मंदिरों, क्षेत्रों के चारों ओर पवित्र भ्रमण करना सभी धर्मों में आम बात है। हालाँकि, किसी नदी के चारों ओर पवित्र सैर करना एक अनोखी प्रथा है - नदी परिक्रमा, नर्मदा नदी के चारों ओर घूमना - उद्गम स्थल से बाएं किनारे पर चलते हुए समुद्र में संगम स्थल तक पहुँचने तक; दाहिने किनारे तक नाव से पार करना और अमरकंद में उद्गम स्थल तक किनारे के साथ चलना; लगभग 2600 किलोमीटर से अधिक लंबी यह पैदल यात्रा लगभग 1200 दिनों में पूरी होनी चाहिए। नर्मदा नदी के चारों ओर पवित्र यात्रा की यह प्रथा मूल रूप से मार्कंडेय महर्षि द्वारा शुरू की गई थी। यात्रा बिना पैसे के करनी होती है और पूरी परिक्रमा रास्ते में भीख मांगकर और शुभचिंतकों द्वारा उपलब्ध कराए गए आश्रय में सोकर ही पूरी करनी होती है। बीच में नदी पार करके यात्रा को शॉर्ट-सर्किट करना अनुमेय नहीं है।

नर्मदा तट पर महत्वपूर्ण पूजा स्थल

- अमरकंटक (शिव का गला) - इसे सभी पवित्र तालाबों की रानी माना जाता है। ज्योतिर्लिंग 'ओम', प्रणवम के आकार में विराजमान है।
- नर्मदा उथगम (नदी देवी नर्मदा की प्रतिमा)
- नेमावर सिथथिथेश्वर मंदिर
- योगिनी मंदिर (64 योगिनी मंदिर)
- चौबीस अवतार मंदिर
- भोजपुर शिव मंदिर
- बरूच में भृगु महर्षि मंदिर
- श्रीराम जानकी मंदिर
- वंगेश्वर मंदिर
- गुरु कोरकनाथर मंदिर
- कार्तिकेय मंदिर
- गुप्तेसवरा महादेव मंदिर (असीरगढ़)

ओंकारेशवर - क्षेत्रस्थल

ओंकारेश्वर मंदिर

महेश्वर मंदिर

कालेश्वर मंदिर

अम्बाजी मंदिर

पाणेश्वर मंदिर

माण्डूक्य ऋषि तपोवन

पुष्कर स्थान

श्री गजानन महाराज संस्थान

ओंकारेश्वर (इंदौर-से)

मध्यप्रदेश

आरती स्थान

ब्रह्मपुरी घाट

श्री गजानन महाराज संस्थान के पास

स्कन्ध पुराण में - रेवा घान्तो - रेवा महात्म्य वर्णनम् (2/54-58)

श्री मार्कण्डेय महर्षि कहते हैं...

रेवामाहात्म्यवर्णनम्

एताश्चान्याश्चसरितःसर्वपापहराःस्मृताः

किं तु ते कारणं तात! वक्ष्यामि नृपसत्तम! ।

समुद्राः सरितः सर्वाः कल्पे कल्पे क्षयं गताः ॥54॥

सभी प वत्र नदियों को पापों से मुक्ति दिलाने वाली नदियों के रूप में जाना जाता है। ले कन, प्रत्येक कल्प के अंत में, इन प वत्र नदियों का भी अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

सप्तकल्पक्षये क्षीणे न मृता तेन नर्मदा ।

नर्मदैकैव राजेन्द्र ! परंतिष्ठेत्सरिद्वरा ॥55॥

इस प्रलय में सात कल्प बीत चुके हैं। फर भी, नर्मदा का अस्तित्व कभी ख़त्म नहीं हुआ। वह कल्पकालम में फैली सर्वव्यापी, बारहमासी नदी है।

तोयपूर्णा महाभाग! मुनिसङ्घैरभिष्टुता ।

गङ्गाद्या सरितश्चान्याः कल्पे कल्पे क्षयं गताः ॥56॥

प वत्रता स्वरूप नर्मदा सदैव सभी संतों और यो गयों द्वारा पूजनीय थीं। सभी नदियों की तरह, गंगा नदी भी कल्पों के साथ पैदा होती है और लुप्त हो जाती है, सवाय, निश्चित रूप से, नर्मदा नदी को छोड़कर।

एषा देवी पुरा दृष्टा तेन वक्ष्यामि तेऽनघ ॥57॥
आश्चर्यभूता राजेन्द्र! त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥58॥

यह देवी पहले के सभी कल्पों में वद्यमान थीं और कल्पों के आरंभ से लेकर अंत तक वे सार रूप में वद्यमान थीं। वह तीनों लोकों में वख्यात थी

ओंकारेश्वर ज्योति र्लंग अद् वतीय एवं व शष्ट है। अन्य सभी ग्यारह ज्योति र्लंग पूर्वा भमुखी हैं। ले कन, ओंकारेश्वर द क्षणमुखी है - द क्षणा ज्योति र्लंग - उस पर एक उत्कृष्ट चत्रण है।

नागासंधरेश्वर मूर्ति भी एक अनूठी अवधारणा है। 'दस फन वाले नाग संहासन' पीठम पर वराजमान भगवान शव और देवी पार्वती की यह मूर्ति पूरे साल के लए बंद रहती है। केवल नाग पंचमी के दिन ही इस मंदिर का गर्भगृह खोला जाता है और वा र्षक पूजा की जाती है।

असीरगढ़ गुप्तेश्वर महादेव मंदिर

नर्मदा के तट पर असीरगढ़ गुप्तेश्वर महादेव मंदिर में, यह माना जाता है क इस युग के चरंजीवी अश्वत्थामन सुबह के दर्शन करते हैं और भगवान महादेव को उषत काल पूजा (भोर पूजा) करते हैं। पुराण कहता है क अश्वथामन अभी भी मंदिर के आसपास के जंगलों में रह रहा है। स्थानीय लोग अक्सर रिपोर्ट करते हैं क उन्हें कभी-कभार अश्वत्थामन की झलक मली है।

हर साल मासी माह शुक्ल पक्षमी के दौरान नर्मदा जयंती बहुत धूमधाम से मनाई जाती है। नदी के उस पार सभी नावों को जोड़कर और सभी नावों में दीपक जलाकर दीपदान का उत्सव मनाया जाता है; पानी के सामने प्रतिबंध से तट तक फैली हुई, इतनी सारी नावों में इतने सारे दीपक देखने का दृश्य मनमोहक होगा।

हाल के कुछ पुष्कर त्यौहार

गंगा पुष्कर - मेष राशि

श्री कांची कामकोटि पीठम जगद्गुरु शंकराचार्य के दैवीय आदेश के साथ, और आधीनकर्ताओं, मठ पोंटिफ्स की मदद और कृपा से, गंगा पुष्कर को वर्ष 2023 में बहुत श्रद्धा और आनंद के साथ मनाया गया।

प्रणीता पुष्कर - मीन राशि

12-4-2022 तेलुंगाना राज्य में आचार्य अनुग्रह के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया

बीमा चंद्रभागा पुष्कर – कुंभ राशि

नवंबर 21,2021 को बंदरपुर, महाराष्ट्रा में आचार्य अनुग्रह के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

तुंगभद्रा पुष्कर - मकर राशि

नवंबर 20,2020 को कर्नाटक राज्य के आनेकुन्ति में तुंगभद्रा नदी में आचार्य अनुग्रह के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

ब्रह्मपुत्र नदी पुष्कर - धनु राशि

कांची कामकोटि पीठम आचार्य के आशीर्वाद से, इतिहास में पहली बार 23 अक्तूबर, 2019 से गौहाटी में ब्रह्मपुत्र पुष्करवाहिनी मनाया गया।

कृष्णा नदी पुष्कर - कन्या राशि

2016 में कांची कामकोटि मठ के शंकराचार्य - परम पूज्य श्री जयेंद्र सरस्वती स्वामीजी और परम पूज्य श्री वजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी की गरिमामयी उपस्थिति में कृष्णा नदी पुष्कर उत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा।

कावेरी नदी पुष्कर - तुला राशि

परम पूज्य श्री कांची कामकोटि पीठम जगद्गुरु शंकराचार्यों के दिव्य निर्देशन और उनकी उपस्थिति में, और आधीन पीठम, मठ पोंटिफ्स की कृपा और समर्थन के साथ, कावेरी के व भन्न स्थानों पर, वशेष रूप से मयिलाडुदुरै और अल्लोर में, कावेरी पुष्कर उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

तामिरबरणी पुष्कर - वृश्चिक राशि

ता मरबरणी पुष्कर कुरुक्कुतुरै मुरुगन मंदिर घाट में 12-10-18 से 23-10-18 तक आचार्य अनुग्रह के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

ओंकारेश्वर

माण्डूक्य ऋषि की तपस्थली

कालेश्वर मंदिर

अम्बाजी मंदिर

बाणेश्वर मंदिर

नदी किनारा

नर्मदा नदी के उद्गम स्थल में प वत्र स्थान...

त्रिमुखी मंदिर

नर्मदा कुंड

श्री यंत्र मंदिर

ओंकारेश्वर

ओंकारेश्वर मंडप

मंदिर से दृश्य

सहस्त्रधारा

माण्डव ऋषि आश्रम

कपिल तीर्थ जलप्रपात

अमरकंद मंदिर

नर्मदा पुष्कर 2024 - ओंकारेश्वर

पुष्कर उत्सव श्री कांची कामकोटि पीठा धपति, जगद्गुरु श्री शंकर वजयेंद्र सरस्वती शंकराचार्य स्वामी, आधीनकर्ताओं और संतों के आशीर्वाद और महामहिम, राज्यपाल, मंत्रियों, जिला कलेक्टर और अन्य वरिष्ठ सरकारी अ धकारियों के महान सहयोग से आयोजित कया जाएगा। . अ धकारियों. कृपया इस मठ नर्मदा पुष्कर महोत्सव में भाग लें, नदी में प वत्र स्नान करें, और पुष्कर के दौरान कए जाने वाले परिहार होम और सभी आध्यात्मिक कार्यक्रमों में भाग लें। हम आप सभी से प्रार्थना करते हैं क आप माँ नर्मदा की कृपा और परमाचार्य आदि शंकराचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लए पुष्कर उत्सव में भाग लें और सर्वशक्तिमान परब्रह्म की कृपा के योग्य बनें।

चतुर वेदपारायणम, महा रुद्र जपम, चंडी पारायणम और काम्यार्थ होम हर सुबह किए जाते हैं। दोपहर 12:00 बजे के आसपास कलश तीर्थम को नर्मदा नदी में अर्पित किया जाता है। फिर होती है पुष्कर डुबकी. शाम को विष्णु, ललिता सहस्रनाम पाठ, रुद्र क्रम अर्चना और नदी आरती की जाएगी।

दान / वस्तुएं

वेद पारायणों, वेदपं डतों और संपूर्ण यज्ञों में समराधना और अन्नदान के लए योगदान को सभी उपहारों में सबसे प वत्र माना जाता है और हम उम्मीद करते हैं क भक्त उदारतापूर्वक दान करें और इन गति व धयों में भाग लें और आशीर्वाद प्राप्त करें।

दिन	देवता	दानन के लए वस्तुएं (उपहार वस्तुएं)
मई 1	मत्रन	सोना, चाँदी, अनाज, भू म
मई 2	अर्यमा	वस्त्र, नमक, गाय के रत्न
मई 3	व्यवस्था	गुड़, सब्जियाँ, फल, मकान, गा ड़याँ
मई 4	सूरज	घी, तेल, शहद, दूध
मई 5	वलासवान	अनाज वाहन, बैल, वृषभ, हलम
मई 6	अरुण	औष धयाँ, कपूर, कस्तूरी, चंदन, इत्र
मई 7	भगवान	सीटें, बिस्तर, कु र्सयाँ, अदरक, रतालू, कंद
मई 8	अंशुमान	चंदन, फूल, छलनी
मई 9	इंद्र	श्रार्द्ध पंडम, ववाह में कुंवारी, वला सता की वस्तुएं, चू ड़याँ, हल्दी
मई 10	पर्जन्यं	सालाक्रामम, पुस्तकें
मई 11	वष्णु	हाथी, घोड़ा
मई 12	ब्रह्मा	तिल, कताबें, लेखन सामग्री

नर्मदा नदी पुष्कर कार्यक्रम अनुसूची

अप्रैल 30	• सुबह 8.00 बजे मंगल गान – नादस्वरम • ओंकारेश्वर, अमलेश्वर, आदि शंकर गुफा और आदि शंकर देवता से आज्ञा प्राप्त करना • शाम 5.00 बजे बर्तनों में सप्तनदियों का आवाहन करके और गजानन आश्रम की ओर प्रस्थान करके सप्त नदी पूजा की जाती है
मई 1	• सुबह 6.00 बजे – मंगल गान - नादस्वरम - पुष्कर ध्वजारोहण, ओंकारेश्वर थ्वजराहोणम, गणपति पूजा • सुबह 7:00 बजे नर्मदा नदी पर कलश तीर्थ समर्पणम और पुष्कर स्नान अनुष्ठान की शुरुआत। • प्रातः 9:00 बजे - गणपति होमम। • प्रातः 11:00 बजे – पूर्णाहुति, आरती, तीर्थवारी
मई 2	नवग्रह होम - बुरे संकेतों का उन्मूलन
मई 3	दुर्गा स्वरूप होम, स्वयंवर कला पार्वती होम - विवाह प्राप्ति के लिए
मई 4	श्री स्वर्णाकर्षण, श्री बैरव होम, वडुग पूजा - व्यापार वृद्धि के लिए
मई 5	श्री महा सुदर्शन होम - स्वास्थ्य के लिए बुरे संकेतों का उन्मूलन
मई 6	श्री संतान गोपाल कृष्ण यज्ञ - श्री पुत्र कामेष्टि यज्ञ - श्री षण्मुग यज्ञ - बाल प्राप्ति के लिए
मई 7	श्री हयग्रीव होम, श्री दक्षिणामूर्ति होम, श्री विद्या महा सरस्वती यज्ञ - शिक्षा और कौशल संवर्धन के लिए
मई 8	श्री धन्वन्तरी होम - स्वास्थ्य और बीमारी के इलाज के लिए
मई 9	श्री कुबेर महालक्ष्मी होम - समृद्धि और धन के लिए
मई 10	श्री चंडी होम होम - विश्व की भलाई और मित्रता के लिए
मई 11	श्री महा रुद्र होम और अमृत मृत्युजय होम - लोकक्षेमम, अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए
मई 12	लंबे जीवन और अच्छे स्वास्थ्य के लिए श्री आयुष होम और नक्षत्र होम

नर्मदा पुष्कर 2024 - ओंकारेश्वर

श्रीक्रोधी वर्ष

चैत्र मास कृष्णपक्ष अष्टमी **17 (1-5-2024)** बुधवार से

वैशाख मास शुक्लपक्ष पंचमी **28 (12-5-2024)** र ववार तक

पुष्कर स्थान

ओंकार श्री गजानन महाराज आश्रम

भक्तिनिवास मम्लेश्वर रोड़

मध्यप्रदेश

आरती स्थान

ब्रह्मपुरी (नर्मदा घाट), ओंकारेश्वर, मध्यप्रदेश 450554

परिहार यज्ञ, होम

श्री. चदम्बरम त्यागप्पा दीक्षतर (98426 94431)

& श्री. चदम्बरम शवराम दीक्षतर **(94433 20379)** के मार्गदर्शन में कए जाएंगे

ति थ. श्रार्द्ध संकल्प, तिल तर्पण, गौरी, ब्रहस्पति, दंपती पूजा:

तमल में स्वाधष गणबाडगल 8072892359

पंडत अशोक दुबे तीर्थ स्वामी, ओंकारेश्वर ज्योतिर्लंग मंदिर

दैनिक कार्यक्रम अनुसूची

सुबह 7.00 बजे	नादस्वरम दल	
	नादस्वरम	इलुप्पपट्टु ई.एस.एस.अरवंद चदंबरम वी.एस. अय्यप्पन
	तवल	इलुप्पपट्टु ई.एस. शंकर तिरुप्पुन्गूर एस. संपत
	ताल	एस. वासु
प्रातः 8.00 बजे	महान्यसा रुद्र, वेद पारायणम	
प्रातः 10.00 बजे	काम्यार्थ होम एवं यज्ञ	
प्रातः 11.00 बजे	पूर्णाहुति	
प्रातः 11.30 बजे	माता नर्मदा नदी तीर्थवारी	
शाम 6.00 बजे	नर्मदा नदी पुष्कर आरती	

रु चकर घटनाएँ...

लंगार्चन पूजा (1325 पाण लंग)

नर्मदा नदी आरती

कार्यक्रम स मति

स मति के अध्यक्ष	श्रीमती महालक्ष्मी सुब्रमण्यन - 9840053289 श्री वीसी सुब्रमण्यन - 99400 53289 श्री महालक्ष्मी चैरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नै
समन्वयक @ ओंकारेश्वर	श्रीमती रमा सुब्रमण्यन - 81449 28666 लेखक - "श्री गजानन महाराज गुरु चरित" श्री. अंजल दुबे - 7247503637, ओंकारेश्वर
स मति सदस्य	श्री रमेश सेतुरामन - (चेन्नै) - 9444008790 श्री के.आर.वेंकटेशन - (चेन्नै) - 9840127415 श्री सुंदर रामन - (मुंबई) - 9820059288 श्री पट्टा भरामन - (चेन्नै) - 9962019172 श्रीमती सुधा सुंदरवरदन - बेंगलूरु - 9663879295
वेद पारायण समन्वयन	श्री जे. चंद्र मौली - 9940080033 ऑडटर, शवार्पणम ट्रस्ट, चेन्नै
अनुसूची प्रबंधन	श्री पट्टाभरामन - (चेन्नै) - 9962019172 श्री वलासाई के. जयरामन - चेन्नै - 9444279696 श्रीमती सुधा सुंदरवरदन - बेंगलूरु - 9663879295
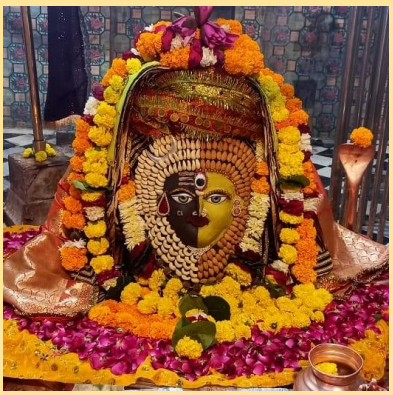
हम इस अवसर पर आपकी गरिमामयी उपस्थिति का अनुरोध करते हैं।